5

उपनिषदों में ब्रह्मविचार: एक मीमांसा

डॉ० कृपाशंङ्करपाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, संस्कृतविभाग
आर०डी०एण्ड डी०जे० कॉलेज
मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर, बिहार
Email- kshankarp@gmail.com

उपनिषदें, ऋषि-चिन्तन-प्रसूत अध्यात्मविद्याकी:प्रसारिकाएँहैं।इनमेंतत्त्वज्ञान की उचाइयों का जो शिखर स्थापित हुआ है वह अजर और अमर है। मनुष्य जीवन के परमफल रूप मोक्ष का घोष करती हुई उपनिषदों ने भारतीय मनीषा का प्रसारण समूचे विश्व में किया है। उपनिषदों का सर्वोच्च ज्ञान, ब्रह्मज्ञान ही है। ब्रह्म क्या है, इस विषय पर हमारे शास्त्रों में पर्याप्त मन्थन हुआ है। विभिन्न उपनिषदों में विभिन्न स्थलों पर विभिन्न प्रकार से ब्रह्म-विचार समाविष्ट हैं। शास्त्र-वर्णित चौरासी लाख योनियों में केवल हम मनुष्य ही ब्रह्म विषयक विचार कर सकते हैं , हलांकि 'ब्रह्म' 'विचार' में नहीं समा सकता क्योंकि विचारों की वैचारिकता का स्रोत भी स्वयं ब्रह्म ही है। प्रकृत शोधपत्र में व्यावहारिक दृष्टिकोण से उपनिषद् सम्बन्धी ब्रह्म विषयक विचारों की एक मीमांसा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

उपनिषदों में मानवजीवन के परमपुरुषार्थरूप मोक्ष के साधनभूतअपरोक्षानुभूतिजन्य ब्रह्मतत्त्व का विस्तार से निरूपण हुआ है। ब्रह्मन् शब्द बृह् धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है बढ़ना या फैलना । इस शब्द का पारमार्थिक अर्थ परमसत्ता है जो सर्वकारणकारण और सर्वतंत्रस्वतंत्रहै।इसी से समग्र अस्तित्व है और इसी में समग्र अस्तित्व है। जितना भी दृश्यादृश्यजडचेतनात्मक एवं नामरूपात्मक संसार है वह ब्रह्म से ही उत्पन्न होता है, ब्रह्म में ही जीवित रहता है और ब्रह्म में ही विलीन हो जाता है। सच्चिदानन्द, ब्रह्म से ही समुतपन्न है और स्वयं ब्रह्मरूप भी है। अनन्तजन्मार्जितपुण्यसंस्कारों के फलस्वरूप साधक अपनी साधना पर चलते हुए गुरुकृपा से उसी ब्रह्म की अपरोक्ष अनुभूति करके स्वयं भी ब्रह्मरूप हो जाता है। मुण्डकोपनिषद् का घोष है .. ब्रह्म वेद ब्रह्मैवभवति। (1) उपनिषदें आत्मा और

©Indira Gandhi National Open University

ब्रह्म के ऐक्य को स्वीकार करती हैं। दोनों सर्वथा एक हैं उनमें लेशमात्र का भी अन्तर नहीं है। उपनिषदों में साधकों को विभिन्न प्रकार से यह समझाने का प्रयास किया गया है कि 'उसमें' और तुममें कोई अन्तर नहीं हैं। 'तत्त्वमसि'(2)उपनिषद् के इस महावाक्य में यह अभेद बताया गया है। ब्रह्मात्मैक्यवाद उपनिषद के ऋषियों की समग्र विश्व को एक महती देन है। 'अयमात्मा ब्रह्म'(3) और ' अहं ब्रह्मास्मि'(4) उपनिषदें के इन महावाक्यों में भी आत्मा और ब्रह्मतत्त्व की अभिन्नता बतायी गयी है। 'प्रज्ञानं ब्रह्म'(5)के द्वारा ज्ञान को ब्रह्मस्वरूप बताया गया। समस्त ज्ञान ब्रह्म में ही अनुस्यूत है तथा समस्त ज्ञान ब्रह्म से ही है इसलिए ब्रह्म ज्ञानस्वरूपहै।विषयी और विषय दोनों में एक ही ब्रह्म है। उपनिषद् कहती है 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'(6) अर्थात् सब कुछ ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही समस्त दृश्य है वही द्रष्टा भी है अर्थात् जो कुछ भी दिख रहा है वह सब ब्रह्म ही है तथा देखने वाला भी वही है।

जीवात्मा में जो ब्रह्म प्रकाशित हो रहा है वही सर्वत्र व्याप्त है।व्यष्टि और समष्टि दोनों में उसी की सत्ता व्याप्त है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड उसी से अनुस्यूत है। जानने वाला और जनाने वाला वही है। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय की त्रिपुटी में वही समाहित है।डॉ० चंद्रधर शर्मा अपनी पुस्तक भारतीय दर्शन में लिखते हैं " जीवात्मा के स्वतःअनुभवसिद्ध होने से उसकी सत्ता असंदिग्ध है किन्तु उसमें विश्वरूपता और अनन्तता नहीं है।बाह्य जगत में विश्वरूपता और अनन्तता तो है किन्तु सत्ता की असंदिग्ध स्वतःसिद्धता नहीं है।दोनों के ऐक्य से परम तत्त्व की स्वतःसिद्ध सत्ता और विश्वरूपता सिद्ध होती है।"(7) उद्दालक और श्वेतकेतु संवाद में उद्दालक का उपदेश है कि यह सब चेतन तथा अचेतन एक ही तत्त्व के रूप हैं।शुद्धअखण्ड चैतन्य तत्त्व ही अस्तित्व स्वरूप होकर जगत में भासता है। जिस प्रकार मिट्टी का ज्ञान होने पर मिट्टी से बने समस्त पदार्थों का तथा स्वर्ण का ज्ञान होने पर समस्त स्वर्णाभूषणों का ज्ञान स्वयमेव हो जाता है उसी प्रकार उस सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्मतत्त्व का ज्ञान हो जाने पर समस्त जडचेतनात्मक जगत का ज्ञान स्वयमेव ही हो जाता है।

उपनिषदें ब्रह्म के दो रूपों का वर्णन करती हैं । एक अपरब्रह्म और दूसरा परब्रह्म।अपरब्रह्म सगुण, सविशेष, सविकल्पक और सोपाधिक है। इसे ईश्वर भी कहते हैं । सगुण ब्रह्म इस जगत के कर्त्ता,धर्ता और हर्ता हैं। वे सृष्टि के उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण हैं। सगुण ब्रह्म या ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वान्तर्यामी हैं। वे सचराचर के एकमात्र स्वामी हैं।उन्हें "विज्ञानमानन्दं ब्रह्म"(8)

©Indira Gandhi National Open University

अर्थात् ज्ञानस्वरूप और आनन्दस्वरूप बताया गया। स्वरूप लक्षण किसी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को उद्भासित करता है तथा तटस्थ लक्षण वस्तु के आगन्तुक धर्मों और परिणामी धर्मों का वर्णन करता है। ब्रह्मसूत्र में ब्रह्म का तटस्थ लक्षण बताया गया "जन्माद्यस्ययतः" (9) अर्थात् बह्म ही इस जगत के जन्म, स्थिति और विनाश का कारण है। सगुणब्रह्म का स्वरूप लक्षण बताते हुए तैत्तिरीयउपनिषद् कहती है कि "सत्यज्ञानमनन्तं ब्रह्म" (10) अर्थात् ब्रह्म सत् है, ब्रह्म आनन्द है और ब्रह्म अनन्तहै।ब्रह्म का कोई ओर- छोर नहीं है। जगत्कारणता, समस्तकल्यणगुणम्पन्नता, सगुण ब्रह्म का तटस्थ लक्षण है तो सच्चिदानन्दत्व सगुण ब्रह्म का स्वरूप लक्षण है।सगुणब्रह्म या ईश्वर कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ हैं।वे ही एक मात्र सम्प्रभु और भुक्ति-मुक्ति प्रदाता हैं।वे ही एकमात्र त्रिकालाबाधितसत् तत्त्व हैं।

उपनिषद्प्रोक्त ब्रह्म का जो दूसरा रूप है वह 'पर ब्रह्म' है। पर ब्रह्म निर्गुण, निरुपाधिक, निर्विशेष, निर्विकल्पकहै।वहप्रपञ्च रहित है, अनिर्वचनीय और अवाङ्मनसगोचरहै।निर्गुण या परब्रह्म को लक्षण में नहीं बांधा जा सकता है।निर्गुण ब्रह्म सबका अधिष्ठान होने के बाद भी सबसे परे है अतीन्द्रिय और निरुपाधिक होने के कारण वह मन, बुद्धि और इन्द्रियों से परे है।डॉ० सी० डी०शर्मा लिखते हैं "जो शुद्ध द्रष्टा, साक्षी, विषयी है, वह बौद्धिक ज्ञान का अथवा किसी चित्तवृत्ति का विषय नहीं बन सकता।किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इन्द्रिय-बुद्धि-वाणी ग्राह्य न होने से वह ब्रह्म शून्य या अभावरूप है।" (11) समस्त व्यवहार का अधिष्ठान होने के कारण ब्रह्म स्वतःसिद्ध और स्वप्रकाशकहै।उपनिषद् उसे "स एषनेतिनेति आत्मा" (12) कहती है परन्तु निषेध किये जाने पर भी उसका निषेध नहीं हो सकता क्योंकि निषेध करने वाले के अन्दर भी उसी चैतन्य की सत्ता अनुस्यूत है।आचार्य शंकर ब्रह्मसूत्र के भाष्य में स्पष्ट करते हैं कि 'य एवहिनिराकर्तातदेवतस्यस्वरूपम्' (13) अनिर्वचनीय का वर्णन कर ही कौन सकता है! उसके विषय में बतानेके लिए भी निषेधप्रणाली का ही सहारा लेना पड़ता है। निर्गुण या परब्रह्म का कोई विशेषण नहीं है वह न छोटा है न बड़ा ,न पतला है न मोटा न पास है न दूर है । इसके बाद भी उससे रहित कुछ नहीं है। "उसमें न रस है न गंध है ,न स्पर्श है, न वाणी है, न मन है, वह न अन्दर है न बाहर है , न वह कुछ खाता है और न उसे कोई खा सकता है।" (14) उपनिषद् कहती है कि उस ब्रह्म को न पाकर वाणी मन के साथ लौट आती है "यतोवाचोनिवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" (15) जो मनबुद्धिइन्द्रियगम्य नहीं है बल्कि मनबुद्धिइन्द्रियउसीसेऊर्जान्वित हैं, वही परब्रह्महै।आँखें उसे देख नहीं सकतीं परन्तु आँखों में देखने की शक्ति उसी की है।

©Indira Gandhi National Open University

वही उपनिषदोक्त निर्गुण ब्रह्म है। उसी के द्वारा सब कुछ जाना जाता है परन्तु उसे कौन जान सकता है ? बृहदारण्यकउपनिषद् कहती है कि...
"येनेदं सर्व विजानातितंकेनविजानीयात् ? विज्ञातारं अरे केनविजानीयात् ?"(16)
अर्थात् जानने वाले को कौन जान सकता है ? कैसे जान सकता है ??उपनिषदों में ब्रह्म के इन दोनों रूपों का विभिन्न प्रकार से वर्णन किया गया है। हमारे तत्त्वचिंतकऋषिगण विधि और निषेध ..इन दो प्रकारों से उस परात्पर ब्रह्म को समझाने का प्रयास करते हैं।

ब्रह्म की जो शक्ति है वही माया या अविद्या है। अपनी इसी शक्ति से वह सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश करता है। अनेक विद्वानों का मत है कि उपनिषदों में माया या अविद्या का वर्णन नहीं है।इसकी विवेचना तो आद्य शंकराचार्य ने अपने अद्वैत वेदान्त के सिद्धांत में ही किया है।यह सही है कि वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों यथा अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत या फिर द्वैताद्वैत आदि में अपनी-अपनी स्थापनाओं के अनुसार सम्बन्धित आचार्यों ने ब्रह्म,उसकी शक्ति, जीव,जगत आदि का तार्किक ढंग से विवेचन किया है परन्तु उपनिषदों में भी इसका मूल किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अवश्य मिलता है। आचार्य रामचन्द्र द रानडे ने अपने ग्रन्थ(18) में माया या अविद्या का उद्गम सिद्ध किया है। उन्होंने उपनिषदों के अनेक स्थलों को दर्शाया है जहाँ माया या अविद्या का उल्लेख कुछ इस प्रकार से हुआ है...
१- ईशावास्योपनिषद् बताया गया है कि में सत्य का मुख स्वर्णिम पात्र से ढका है।(मंत्र सं. 15) यह स्वर्णिम पात्र माया या अविद्या ही है।
२- कठोपनिषद् में आया है "अविद्यामन्तरेवर्तमानाः स्वयं धीराःपण्डितंमन्यमानाः।(1/2/4) यह अविद्या भी वही माया ही है।
३- मुण्डकोपनिषद् में अविद्या को ग्रन्थि कहा गया है जिसे खोलने पर ही आत्मसाक्षात्कार हो सकता है।(2/1/10)

इस प्रकार से आचार्य रामचंद्र जी ने अनेक स्थलों को गिनाया हैं जहाँ से यह सिद्ध हो रहा है कि ब्रह्म की शक्ति अविद्या या माया का उल्लेख उपनिषदों में मिलता है। यह समस्त दृश्यादृश्य प्रपंच मायानिर्मित ही है।जीव जगत दोनों अविद्या से ही बने हैं। पारमार्थिक, व्यावहारिक और प्रातिभासिक ये वेदान्तोक्त तीन सत्ताएँ हैं। रात के अंधेरे में जैसे कोई व्यक्ति किसी रस्सी को साँप मान बैठता है लेकिन प्रकाश होने पर उसे ज्ञान हो जाता है कि यह सर्प नहीं है बल्कि रस्सी है उसी प्रकार ब्रह्मसाक्षात्कार होने पर यह जगत मिथ्या हो जाता है। रज्जु का सर्प भासना और

©Indira Gandhi National Open University

ब्रह्म का रज्जु भासना दोनों अविद्या या माया के कारण ही होता है। माया ब्रह्म की अभिन्न शक्ति है।जैसे शक्तिमान से शक्ति अलग नहीं रह सकती उसी प्रकार यह माया भी ब्रह्म से अलग नहीं है। यह अनादि है परन्तु भगवद्दर्शन अथवा ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति से उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है। वह ब्रह्म हम समस्त प्राणियों के अन्दर है और उसकी अपरोक्षानुभूति करके हम जन्ममरण की अनादि श्रृंखला से निकल सकते हैं।

उपनिषदें न केवल ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करती हैं अपितु उसकी अपरोक्षानुभूति का साधन भी बताती हैं। श्रीमत्सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में कहा गया है...."वेदान्तोनामोपनिसत्प्रमाणंतदुपकारीणिशारीरकसूत्रादीनि च"(17) अर्थात् उपनिषद् को प्रमाण मानकर चलने वाला शास्त्र वेदान्त है और शारीरकसूत्रादि (ब्रह्मसूत्रादि) शास्त्र उनके उपकारक ग्रन्थ हैं। वेदान्त के ब्रह्मसूत्रादि ग्रन्थों में ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति के 'अधिकारी' का लक्षण दिया गया है। अधिकारी का प्रधान लक्षण साधनचतुष्टयसम्पन्नता है। यह चार साधन हैं-
१- नित्यानित्यवस्तुविवेक अर्थात् साधक को नित्य और अनित्य वस्तुओं का विवेक होना चाहिए।२-इहामुत्रार्थफलभोगविराग अर्थात् साधक को इस लोक और परलोक सम्बन्धी समस्त भोगपदार्थों के प्रति विराग होना चाहिये।३-ब्रह्मानुभूत्यर्थ साधक के अन्दर शम,दम,उपरति,तितिक्षा,समाधान और श्रद्धा जैसे गुण होना चाहिए तथा ४-साधक के अन्दर मोक्ष की अपनी इच्छा भी होनी चाहिये जिसे 'मुमुक्षा' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त भी उसे समस्त काम्य और निषिद्ध कर्मों का त्यागी होना चाहिए साथ ही उसे इस जन्म अथवा पूर्व जन्म में वेदादि शास्त्रों को पढ़े हुआ भी होना चाहिए। इन योग्यताओं से युक्त होकर ही कोई साधक ज्ञानमार्ग से उस परात्पर ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति कर सकता है।

जीव अनन्तकाल से जन्म लेता और मरता आया है।अनादिवासना के कारण वह वहकर्मबन्धन से छूट नहीं पाता और जन्म और मृत्यु के फेर में पड़ा रहता है। यद्यपि उस के अन्दर उसी विशुद्ध चैतन्यस्वरूप ब्रह्म का प्रकाश है तथापि वह अनादि अविद्या के कारण उसकी अनुभूति नहीं कर पाता। प्रत्येक जीवात्मा सुख चाहता है और इसके बदले में उसे सुख मिलता नहीं क्योंकि उपनिषद् कहती है कि अल्प में सुख नहीं है सुख तो भूमा में ही है...
'योवैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति । भूमैवसुखंभूमात्वेवविजिज्ञासितव्य इति।'(19)

©Indira Gandhi National Open University

वह भूमा (ब्रह्म) ही अनन्त सुख की राशि है उसकी अनुभूति के बिना सुख भी सुख नहीं है। उस भूमा की अनुभूति में ही रस है। वह रसस्वरूप ही है।उससे ही रस है , उसमें ही रसहै।उसरस को पाकर ही हम सच्चे आनन्द में स्थित हो सकते हैं। उपनिषद् कहती है---
"रसोवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वाSSनन्दीभवति।"(20)

मुण्डकोपनिषद् में ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध बताया गया है कि जिस प्रकार जलती हुई आग से उसी के समान रूप वाली सहस्रों चिनगारियाँ निकलती रहती हैं,उसी प्रकार हे सौम्य ! ये सारी प्रजा सत्रूपी कारण से ही उत्पन्न हुई है---
यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः,
सहस्रशःप्रभवन्तेसरूपाः ।
तथाक्षराद्विविधासोम्यभावाः,
प्रजायन्तेयत्रचैवापियन्ति ।।(21)

ब्रह्मविद्या समस्त विद्याओं में सर्वोच्च है। ब्रह्म को जानने के बाद कुछ जानना शेष नहीं रहता बल्कि सब जाना हुआ ही हो जाता है।उपनिषदें ब्रह्म के महत्त्व को जिस तरह से रेखांकित करती हैं उससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान और अपरोक्षानन्द का सर्वोच्च शिखर ब्रह्मानुभूति ही है।उसे जानने के बाद जीव के समस्त बंधन कट जाते हैं। अनन्तजन्मों के बन्धन कट जाते हैं और जीव अपने स्वरूप को प्राप्त होकर जन्म और मृत्यु की पाश से मुक्त हो जाता है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में आता है..
ज्ञात्वादेवं सर्व पाशापहानिः
क्षीणैःक्लेशैर्जन्ममृत्युप्रहाणिः(22)

आज हमारा समाज जाति,धर्म और सम्प्रदायों में बटा हुआ है। एक जाति दूसरी जाति को,एक धर्म दूसरे धर्म को ,एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को अपने से नीचा दिखाने में अपनी श्रेष्ठता समझता है। उपनिषदें इस बात का घोष करती हैं कि न सिर्फ़ प्राणिमात्र में अपितु समग्र जडचेतन में उस एक ब्रह्म की ही एक मात्र सत्ता है।कोई दूसरा नहीं है, कोई पराया नहीं है ।सब अपने हैं।तत्त्वतः सब एक ही हैं। आज मनुष्यों के मध्य असहिष्णुता इतनी बढ़ गयी है कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का चिह्न ही मिटा देना चाहता है। हमारे औपनिषद ऋषियों ने ब्रह्मज्ञान का यह अमर संदेश केवल भारत के लिए ही नहीं दिया है अपितु यह समग्र विश्व के लिए ही दिया है।"विश्व के समस्त मानव समाज को नवचेतना देकर आत्यन्तिकशान्ति प्रदान

©Indira Gandhi National Open University

करने का श्रेय हमारे औपनिषदसिद्धान्त को है।उपनिषदें साक्षात् कामधेनु हैं।।ब्रह्मसूत्रों की रचना इन्हीं के आधार पर हुई है तथा श्रीमद्भगवद्गीता गोपालनन्दन द्वारा दोहन किया हुआ इन्हीं का परम मधुर दुग्धामृत है।"(23)उपनिषद् के ब्रह्म के विषय में सोचने मात्र से हमें अपनी लघुता और अज्ञान की अनुभूति होने लगती है।जब उस एक ब्रह्म को ही हम सर्वत्र और सब में देखने लगते हैं तब हमारी द्वेष बुद्धि समाप्त हो जाती है और हम सच्चे सुख को प्राप्त करते हैं। कठोपनिषद् में आता है"जो एक सबको अपने वश में रखने वाला और सब प्राणियों का अन्तरात्मा है तथा जो अपने एक रूप को ही नाना रूपों में व्यक्त करता है, अपनी बुद्धि में स्थित उस आत्मदेव(ब्रह्म) को जो धीर पुरुष देखते हैं; उन्हीं को शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है दूसरों को नहीं...

एक वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकंरूपं बहुधा यःकरोति।
तमात्मस्थं येSनुपश्यन्तिधीरा
स्तेषांसुखंशाश्वतंनेतरेषाम्।।(24)

इस प्रकार से हम देखते हैं कि उपनिषदों में बहुत व्यवस्थित ढंग से ब्रह्मविचार हुआ है। वर्तमान में हमें दो सौ से ऊपर उपनिषदें प्राप्त होती हैं।इनमें वेदों का ज्ञानकाण्ड वर्णित है। भगवान् शंकराचार्य ने जिन दश उपनिषदों पर अपना भाष्य लिखा है,विद्वानों ने उन्हें सर्वाधिक प्रामाणिक माना है।भगवान् शंकराचार्य ने अपने भाष्यों में ब्रह्म के अद्वयस्वरूप की व्याख्या की। उपनिषदें ब्रह्मज्ञान की उद्घाषिकाएँहैं।ऋषियों ने अपनी अनुभूतियों को स्वर देते हुए मनुष्य मात्र को ब्रह्मज्ञान के लिए योग्य बताया है। इसके लिए जो योग्यताएं हैं, वे सबके लिए समान हैं।उपनिषदों का यह डिण्डिम नाद है कि अपने अन्दर स्थित चैतन्य का साक्षात्कार करने के बाद जीव अपने ब्रह्मस्वरूप को प्राप्त कर सकता है।इसके लिए हमारे तत्त्ववेत्ताओं ने जो साधन बताएँ हैं वे साधन भी हम सबके लिए समानरूप से मंगलकारी हैं।

--संदर्भ--

1- मुण्डकोपनिषद् /3/2/9
2-छान्दोग्य उपनिषद् / 6/ 8/ 7
3-माण्डूक्य उपनिषद् /1/2
4-बृहदारण्यकोपनिषद्/1/4/10
5-ऐतरेयोपनिषद् /3/1/3

©Indira Gandhi National Open University

6-छान्दोग्य उपनिषद् /3/14/1
7- भारतीय दर्शन:आलोचन और अनुशीलन, पृष्ठ 10
8-बृहदारण्यक उपनिषद्/3/9/28
9- ब्रह्मसूत्र/1/1/2
10-तैत्तिरीय उपनिषद् /2/1
11-भारतीय दर्शन:आलोचन और अनुशीलन, पृष्ठ 12
12- बृहदारण्यकउपनिषद् /4/4/22
13- ब्रह्मसूत्र/2/3/7
14-बृहदारण्यक उपनिषद्/3/8/8
15- तैत्तिरीयउपनिषद् /2/9
16-बृहदारण्यक उनिषद्/ 2/4/14
17- A Constructive Survey of Upanishadic Philosophy पृष्ठ 163-165
18- वेदान्तसार/मंगलाचरणोपरान्य
19- छान्दोग्योपनिषद् /7/23/1
20- तैत्तिरीयउपनिषद् /2/7
21- मुण्डकोपनिषद् /2/1/1
22-श्वेताश्वतरोपनिषद्/1/11
23-कल्याण, उपनिषद्अंक,पृष्ठ- 59
24- कठोपनिषद्/2/2/12

--संदर्भ ग्रन्थ--

1- मुण्डकोपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
2- माण्डूक्योपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
3-छान्दोग्योपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
4-बृहदारण्यकोपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
5-ऐतरेयोपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
6-शर्मा चंद्र धर,भारतीयदर्शन:आलोचन और अनुशीलन,मोतीलालबनारसीदास नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1995
7-महर्षि वेदव्यास,ब्रह्मसूत्र
8- तैत्तिरीयोपनिषद् ,गीताप्रेसगोरखपुर
9-Ranade RamchandraDattatreya, A Constructive Survey of Upanishadic Philosophy,Oriental Books Agency, Pune,1926

©Indira Gandhi National Open University

10- श्रीमत्सदानन्दयोगीन्द्र/वेदान्तसार
11- श्वेताश्वतरोपनिषद्,गीताप्रेसगोरखपुर
12-कल्याण, उपनिषद्-अंक, गीताप्रेसगोरखपुर, ग्यारहवाँ पुनर्मुद्रण,सं०2068
13- कठोपनिषद्, गीताप्रेसगोरखपुर

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 38-46, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University